पियाजे की मानसिक विकास की अवस्थाएँ

Stages of Piaget's Cognitive Development

पियाजे ने संज्ञानात्मक विकास की आयु के अनुसार निम्न चार अवस्थाएँ बतायी हैं-

1. संवेदीगात्मक अवस्था : 0-2 वर्ष (Sensorimotor stage)
2. पूर्व-क्रियात्मक अवस्था : 2-7 वर्ष (Pre-operational stage)
3. मूर्त-क्रियात्मक अवस्था : 7-11 वर्ष (Concrete-operational stage)
4. औपचारिक क्रियात्मक अवस्था :11-15 वर्ष (Formal-operational stage)

1. संवेदीगात्मक अवस्था: 0-2 वर्ष (Sensorimotor Stage)

यह अवस्था बालक के जन्म से लेकर 2 वर्ष की अवधि तक रहती है। इस अवस्था में बालक इन्द्रियों और संवेदनाओं के द्वारा ज्ञान प्राप्त करता है। इसमें जीवन के प्रथम वर्ष में बालक किसी वस्तु की अवधारणा विकसित करता है। इसके बाद बालक अपने पहुँच से परे लुप्त हुई वस्तुओं का पुनरुद्धार करने का प्रयत्न करता है। वस्तुओं का आकार अपने मस्तिष्क में ग्रहण करने के पश्चात वह अभ्यास के अवसरों का उपयोग करता है।

जन्म के समय बालक कोई ज्ञान नहीं रखता। धीर-धीरे वह ज्ञान प्राप्त करता है। यह समस्त ज्ञान इन्द्रियों और संवेदनाओं के द्वारा प्राप्त करता है। इस आयु में बालक शारीरिक रूप से वस्तुओं को पकड़कर इधर-उधर रखता है, उन्हें उठाता है, हिलाता-डुलाता है तथा वस्तुओं को मुँह में डालकर ज्ञान प्राप्त करता है। विस्तार से पढ़ें - संवेदीगात्मक अवस्था।

2. पूर्व-क्रियात्मक अवस्था: 2-7 वर्ष (Preoperational Stage)

यह भाषा कौशल विकास की प्रमुख अवस्था है, जिसमें सन्दर्भ शब्दों की समझ पैदा होने लगती है। अब बालक वस्तु तथा उसके सन्दर्भ को प्रकट करने वाले शब्दों में अन्तर स्पष्ट करने लगता है चिह्न एवं प्रतीक में अन्तर स्पष्ट होने लगते हैं।

विचार एवं कार्यों में गति आ जाती है, जिससे बालक अधिक से अधिक सूचनाएँ एकत्र करने लगता है। धीरे-धीरे उसमें तार्किक गणितीय सम्प्रत्ययों (Logic mathematical operation) का विकास होने लगता है। क्रियाओं का मानसिक प्रस्तुतीकरण प्रारम्भ हो जाता है, जिसे विचार (Thought) कहा जाता है।

यह अन्तर्दृष्टि द्वारा सीखना या सूझ द्वारा सीखना (Insight learning) की आदिम अवस्था है, जिसमें बालक किसी बाह्य व्यवहार (Overcaution) के बिना अपनी समस्याओं को मानसिक रूप से सुलझाने लगता है। विस्तार से पढ़ें - पूर्व-क्रियात्मक अवस्था।

3. मूर्त-क्रियात्मक अवस्था: 7-11 वर्ष (Concrete-operational Stage)

मूर्त क्रियात्मक अवस्था 7 से 11 वर्ष तक होती है। इसे संज्ञानात्मक विकास का मुख्य परिवर्तन बिंदु माना जाता है। जब बालक इस अवस्था में आता है तो उसके विचार प्रौढ़ों के विचारों के अधिक निकट होते हैं। इस अवस्था में बालक अनेक तार्किक क्रियाएँ करने में समर्थ हो जाता है।

मूर्त क्रियात्मक तर्क अधिक तार्किक, नम्य और संगठित होता है। इस अवस्था में बालक-बालिकाओं में चिन्तन समस्या समाधान के कौशल का विकास होता है। विस्तार से पढ़ें - मूर्त-क्रियात्मक अवस्था।

4. औपचारिक-क्रियात्मक अवस्था: 11-15 वर्ष (Formal-operational Stage)

यह अवस्था मानसिक विकास की ऊर्ध्वगामी प्रक्रिया (Vertical Decalage) की अवस्था है अर्थात् इस अवस्था में समस्याओं के समाधान हेतु उच्च मानसिक स्तर की मानसिक क्षमताएँ विकसित होती हैं, जबकि मूर्त क्रियात्मक अवस्था (Concrete operational stage) में क्षैतिज (Horizontal) दिशा में मानसिक क्षमताओं का विकास अधिक होता है।

इस अवस्था में किशोर विचारों के माध्यम से स्थूल अनुभवों के अभाव में भी चिन्तन कर सकता है तथा समस्याओं का मानसिक समाधान ढूँढ सकता है। वह परिकल्पनाएँ बना सकता है तथा उनकी सत्यता स्थापित कर सकता है। विस्तार से पढ़ें - औपचारिक-क्रियात्मक अवस्था।